UP Board Class 12 Hindi 2026 (Set 301 BE) Question Paper with Solutions

General Instructions

(i) This booklet contains 14 questions, each provided with a complete, step-by-step solution.

(ii) It comprises 13 single-correct multiple-choice questions.

(iii) Attempt each question on your own before reviewing the given solution.

1(a). 'ब्राह्मण' पत्रिका प्रकाशित हुई थी –

(A) द्विवेदी युग में

(B) छायावाद युग में

(C) भारतेन्दु युग में

(D) प्रगतिवाद युग में

Correct Answer: (C) भारतेन्दु युग में

Solution:

उत्तर: 'ब्राह्मण' पत्रिका प्रतापनारायण मिश्र द्वारा 1883 ई. में प्रकाशित की गई थी, जो भारतेन्दु युग (1868-1900) का प्रतिनिधि पत्रिका-प्रकाशन था। अतः सही उत्तर है – भारतेन्दु युग में (विकल्प iii)।

1(b). 'आवारा मसीहा' रचना की विधा है –

(A) कहानी

(B) जीवनी

(C) नाटक

(D) उपन्यास

Correct Answer: (B) जीवनी

Solution:

उत्तर: 'आवारा मसीहा' विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की प्रामाणिक जीवनी है, जिसे हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ जीवनियों में गिना जाता है। अतः सही उत्तर है — जीवनी (विकल्प ii)।

1(c). राहुल सांकृत्यायन की रचना है —

(A) 'राष्ट्र जीवन की दिशा'

(B) 'आखिरी चट्टान'

(C) 'घुमक्कड़ शास्त्र'

(D) 'अपने अपने अजनबी'

Correct Answer: (C) 'घुमक्कड़ शास्त्र'

Solution:

उत्तर: राहुल सांकृत्यायन घुमक्कड़ी-यात्रा साहित्य के जनक माने जाते हैं और उन्होंने स्वयं 'घुमक्कड़ शास्त्र' नामक ग्रन्थ लिखकर घुमक्कड़ी को एक विधा/जीवन-दर्शन के रूप में प्रतिष्ठित किया। अतः सही उत्तर है — 'घुमक्कड़ शास्त्र' (विकल्प iii)।

1(d). द्विवेदी युग के लेखक हैं —

(A) चतुरसेन शास्त्री

(B) अध्यापक पूर्ण सिंह

(C) रामकृष्ण दास

(D) डॉ. नगेन्द्र

Correct Answer: (B) अध्यापक पूर्ण सिंह

Solution:

उत्तर: अध्यापक पूर्णसिंह (1881-1931) द्विवेदी युग (1900-1918) के प्रमुख निबन्धकार थे, जिनके निबन्ध 'आचरण की सभ्यता' आदि सरस्वती पत्रिका में छपे। डॉ. नगेन्द्र आधुनिक (स्वातन्त्र्योत्तर) आलोचक हैं, अतः वे द्विवेदी युग के नहीं हैं। सही उत्तर है — अध्यापक पूर्ण सिंह (विकल्प ii)।

1(e). 'कंकाल' उपन्यास के लेखक हैं —

(A) प्रेमचन्द

(B) उदयशंकर भट्ट

(C) इलाचन्द्र जोशी

(D) जयशंकर प्रसाद

Correct Answer: (D) जयशंकर प्रसाद

Solution:

उत्तर: 'कंकाल' (1929) छायावादी युग के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित सामाजिक उपन्यास है, जो धार्मिक पाखण्ड और सामाजिक विसंगतियों पर केन्द्रित है। सही उत्तर है — जयशंकर प्रसाद (विकल्प iv)।

2(a). हिन्दी साहित्य के प्रथम कवि के रूप में प्रतिष्ठा है —

(A) विद्यापति को

(B) रैदास को

(C) सरहपा को

(D) चन्दबरदाई को

Correct Answer: (C) सरहपा को

Solution:

उत्तर: आदिकाल के सिद्ध साहित्य के अन्तर्गत सरहपा (सरहपाद, लगभग 8वीं शताब्दी) को हिन्दी/अपभ्रंश का प्रथम कवि माना जाता है, जिनके दोहाकोश प्राचीनतम रचनाओं में गिने जाते हैं। सही उत्तर है — सरहपा (विकल्प iii)।

2(b). हिन्दी साहित्य में शृंगार काल कहा जाता है —

(A) आदिकाल को

(B) भक्तिकाल को

(C) रीतिकाल को

(D) छायावाद को

Correct Answer: (C) रीतिकाल को

Solution:

उत्तर: रीतिकाल (1700-1900) में शृंगार-रस-प्रधान काव्य-रचना की प्रधानता रही, नायिका-भेद और अलंकार-निरूपण इसकी मुख्य प्रवृत्ति रही, अतः इसे शृंगार काल भी कहा जाता है। सही उत्तर है — रीतिकाल (विकल्प iii)।

2(c). 'नौकाविहार' की रचना पन्त ने किस स्थान पर की है?

(A) रामगढ़

(B) काला काँकर

(C) प्रयाग

(D) आँसी

Correct Answer: (B) काला काँकर

Solution:

उत्तर: सुमित्रानन्दन पन्त ने 'नौकाविहार' कविता काला काँकर (प्रतापगढ़, उ.प्र.) में गंगा-तट पर नौका-विहार के अनुभव से प्रेरित होकर लिखी थी। सही उत्तर है — काला काँकर (विकल्प ii)।

2(d). कितनी नावों में कितनी बार काव्यसंग्रह के रचयिता हैं

(A) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(B) शमशेर बहादुर सिंह

(C) 'अज्ञेय'

(D) भवानी प्रसाद मिश्र

Correct Answer: (C) 'अज्ञेय'

Solution:

उत्तर: 'कितनी नावों में कितनी बार' (1967) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है, जिसके लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। सही उत्तर है — 'अज्ञेय' (विकल्प iii)।

2(e). इनमें से छायावादी कवि हैं —

(A) मुकुटधर पाण्डेय

(B) शमशेर बहादुर सिंह

(C) मुक्तिबोध

(D) बालमुकुन्द गुप्त

Correct Answer: (A) मुकुटधर पाण्डेय

Solution:

उत्तर: मुकुटधर पाण्डेय को हिन्दी में छायावाद के प्रवर्तक कवि के रूप में जाना जाता है (उनका लेख 'हिन्दी में छायावाद' 1920 में सरस्वती में छपा)। शमशेर बहादुर सिंह व मुक्तिबोध प्रयोगवाद/नई कविता के कवि हैं तथा बालमुकुन्द गुप्त भारतेन्दु-युगीन निबन्धकार-व्यंग्यकार हैं। सही उत्तर है — मुकुटधर पाण्डेय (विकल्प i)।

3. निम्नलिखित गद्यांश के नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दीजिए।
पृथ्वी पर निवास करने वाले जनों का विस्तार अनंत है — नगर और जनपद, पुर और गाँव, जंगल और पर्वत, नाना प्रकार के जनों से भरे हुए हैं। ये जन अनेक प्रकार की भाषाएँ बोलनेवाले और अनेक धर्मों के माननेवाले हैं, फिर भी ये मातृभूमि के पुत्र हैं और इस कारण उनका सौहार्द भाव अखण्ड है। सभ्यता और रहन-सहन की दृष्टि से जन एक-दूसरे से आगे-पीछे हो सकते हैं, किन्तु इस कारण से मातृभूमि के साथ उनका जो सम्बन्ध है, उसमें कोई भेदभाव उत्पन्न नहीं हो सकता। पृथ्वी के विशाल प्रांगण में सब जातियों के लिए समान क्षेत्र है।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।
ख) पृथ्वी पर रहनेवाले कहाँ भरे हुए हैं?
ग) लेखक ने मातृभूमि का पुत्र किसे कहा है?
घ) मातृभूमि को लेकर किसमें भेदभाव नहीं है?
ङ) सब जातियों के लिए कौनसा क्षेत्र समान है?

Correct Answer: —

Solution:

क) यह गद्यांश राष्ट्र और मातृभूमि की एकता पर आधारित एक निबन्ध का अंश है; भाषा-शैली व विषयवस्तु के आधार पर यह राष्ट्रीय-चेतना सम्बन्धी निबन्ध-परम्परा की रचना प्रतीत होती है — मूल पाठ्यपुस्तक से सटीक शीर्षक व लेखक-नाम की पुष्टि प्रामाणिक प्रति से करें।

ख) पृथ्वी पर रहनेवाले जन नगर और जनपद, पुर और गाँव, जंगल और पर्वत — इन सब में नाना प्रकार से भरे हुए हैं।

ग) लेखक ने विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले और विभिन्न धर्मों को माननेवाले सभी जनों को मातृभूमि का पुत्र कहा है, क्योंकि वे सब एक ही मातृभूमि से जुड़े हैं।

घ) सभ्यता और रहन-सहन में जन एक-दूसरे से आगे-पीछे भले हों, किन्तु मातृभूमि के साथ उनके सम्बन्ध में कोई भेदभाव नहीं है।

ङ) पृथ्वी के विशाल प्रांगण में सब जातियों के लिए समान क्षेत्र है — अर्थात मातृभूमि पर सबका समान अधिकार है।

OR

निम्नलिखित गद्यांश के नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

भारत के अनेक महापुरुष, जिनकी भारतीय परम्परा और संस्कृति के प्रति अनन्य निष्ठा है, इन बुराइयों के विरुद्ध लड़े। आज के अनेक आर्थिक और सामाजिक विधानों की हम जाँच करें, तो पता चलेगा कि वे हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने के कारण युगानुकूल परिवर्तन और परिवर्धन की कमी से बनी हुई रूढ़ियाँ, परकियों के साथ संघर्ष की परिस्थिति से उत्पन्न माँग को पूरा करने के लिए अपनाए गए उपाय अथवा परकियों द्वारा थोपी गयी या उनका अनुकरण कर स्वीकार की गई व्यवस्थाएँ मात्र हैं। भारतीय संस्कृति के नाम पर उन्हें जिन्दा नहीं रखा जा सकता।

क) प्रस्तुत गद्यांश के पाठ का नाम और लेखक का नाम लिखिए।
ख) कौन लोग बुराइयों के प्रति लड़े थे?
ग) संस्कृति के क्षीण होने का क्या प्रभाव पड़ा है?
घ) युगानुकूल परिवर्तन पर रूढ़ियाँ कैसे प्रभावी रहीं?
ङ) भारतीय संस्कृति के नाम पर किसे जिन्दा नहीं रखा जा सकता?

Correct Answer: –

Solution:

क) यह गद्यांश भारतीय संस्कृति के सतत मूल्यांकन और रूढ़ियों की समीक्षा पर आधारित एक सांस्कृतिक-चिन्तन निबन्ध का अंश है – मूल शीर्षक/लेखक-नाम पाठ्यपुस्तक की प्रामाणिक प्रति से सत्यापित करें।
ख) भारत के वे अनेक महापुरुष जिनकी भारतीय परम्परा और संस्कृति के प्रति अनन्य निष्ठा थी, वे इन बुराइयों के विरुद्ध लड़े।
ग) संस्कृति के क्षीण होने से हमारी सांस्कृतिक चेतना कमजोर हुई, जिसके कारण युगानुकूल परिवर्तन व परिवर्धन का अभाव होने से पुरानी रूढ़ियाँ बनी रहीं।
घ) युगानुकूल परिवर्तन एवं परिवर्धन की कमी के कारण ही रूढ़ियाँ मजबूती से बनी रहीं और परिस्थितियों के अनुरूप न बदल सकीं।
ङ) परकियों के संघर्ष से उत्पन्न माँग पूरी करने हेतु अपनाए गए उपाय, या परकियों द्वारा थोपी गयी अथवा उनका अनुकरण कर स्वीकार की गई व्यवस्थाओं को भारतीय संस्कृति के नाम पर जिन्दा नहीं रखा जा सकता।

4. निम्नलिखित पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
कबहुँ होत सत चंद कबहुँ प्रगटत दुरि भाजत। पवन रावन बस बिम्ब रूप जल में बहु साजत॥ मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै। कै तरंग की डोर हिंडोरनि करत कलोलै॥ कै बालगुड़ी नभ में उड़ी सोहत इत उत धावती। कै अवगाहत डोलत कोऊ ब्रजरमनी जल आवती॥

क) प्रस्तुत पद्यांश के कविता का शीर्षक और रचयिता का नाम लिखिए।
ख) कवि यमुना के जल में पड़े प्रतिबिम्ब को देखकर क्या अनुभव करता है?
ग) जल की तरंगों में कवि कैसा अनुभव करता है?
घ) 'मनु ससि भरि अनुराग जमुन जल लोटत डोलै' में कौनसा अलंकार है?
ङ) यमुना नदी के जल में कवि किसके आगमन का अनुभव करता है?

Correct Answer: –

Solution:

क) यह छन्द रीतिकालीन कवि की कृष्ण-भक्ति/प्रकृति-वर्णन परम्परा की रचना है — चन्द्र-प्रतिबिम्ब व यमुना-जल के इस सवैया-शैली वर्णन के शीर्षक व रचयिता का नाम पाठ्यपुस्तक की प्रामाणिक प्रति से सत्यापित करें।

ख) कवि यमुना के जल में चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को देखकर कभी उसे सत्य (वास्तविक चन्द्र)-सा और कभी दूर भागता-सा अनुभव करता है — मानो पवन के वश में रावण (राक्षस) का बिम्ब-रूप जल में सज रहा हो।

ग) जल की तरंगों में कवि ऐसा अनुभव करता है मानो चन्द्रमा स्वयं यमुना के प्रेम में डूबकर लोट-पोट हो रहा हो, या तरंगों की डोर से हिंडोले पर झूल-झूलकर क्रीड़ा कर रहा हो।

घ) इस पंक्ति में **उत्प्रेक्षा अलंकार** है — चन्द्र-प्रतिबिम्ब की तरंगों में हलचल को प्रेम में डूबकर लोटने की कल्पना (मनु/मनो शब्द के प्रयोग) के रूप में वर्णित किया गया है।

ङ) यमुना के जल में हलचल देखकर कवि को लगता है मानो कोई ब्रज-रमणी (गोपी) स्नान के लिए जल में उतर रही हो, या बालगुड़ी (पतंग) नभ में उड़ती-सी सुहावनी लग रही हो — इस प्रकार कवि किसी ब्रजरमणी के जल में आगमन का आभास पाता है।

OR

निम्नलिखित पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बरस तू बरस-बरस रसधार। पार ले चल तू मुझको, बहा, दिखा मुझको भी निज गर्जन-भैरव-संसार। उथल-पुथल कर हृदय मचा हलचल। चल रे चल, मेरे पागल बादल।

क) प्रस्तुत पद्यांश के कविता का शीर्षक और रचयिता का नाम लिखिए।
ख) किसे पार ले जाने की बात कवि करता है?
ग) 'गर्जन-भैरव-संसार' से कवि का क्या आशय है?
घ) हृदय में उथल-पुथल क्यों होता है?
ङ) 'मचा हलचल' — बादल से कवि का क्या आशय है?

Correct Answer: —

Solution:

क) यह प्रगतिवादी/प्रयोगवादी शैली की गतिशील स्वच्छंद कविता है, 'पागल बादल' के सम्बोधन व लघु-पंक्ति शिल्प के आधार पर — शीर्षक व रचयिता-नाम पाठ्यपुस्तक से सत्यापित करें।
ख) कवि स्वयं को पागल बादल के सहारे रसधार में बहाकर पार ले जाने की बात करता है — वह बादल की तीव्र, उन्मुक्त गति में अपने बन्धनों से मुक्त होना चाहता है।
ग) 'गर्जन-भैरव-संसार' से आशय है वह भयंकर, गरजता हुआ प्रचण्ड संसार जिसे बादल की गर्जना के माध्यम से कवि प्रत्यक्ष अनुभव करना चाहता है — अर्थात प्रकृति के विराट, उग्र रूप का साक्षात्कार।
घ) हृदय में उथल-पुथल इसलिए होता है क्योंकि बादल की गर्जना और वर्षा की तीव्रता कवि के भीतर की बेचैनी, आवेग और मुक्ति की छटपटाहट को झकझोर देती है।
ङ) 'मचा हलचल' से कवि का आशय है कि बादल अपनी उन्मुक्त, उद्दाम गति से सम्पूर्ण वातावरण में हलचल मचा दे — वह बादल को स्थिर नहीं, बल्कि निरन्तर गतिशील देखना चाहता है, इसीलिए 'चल रे चल' कहकर पुकारता है।

5(a). निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवन परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए — i) दीनदयाल उपाध्याय ii) वासुदेव शरण अग्रवाल iii) हरिशंकर परसाई

Correct Answer: —

Solution:

हरिशंकर परसाई (1922-1995): हिन्दी के सर्वाधिक प्रखर व्यंग्यकार, जन्म जमानी (होशंगाबाद, म.प्र.) में हुआ। इन्होंने 'वसुधा' पत्रिका का सम्पादन किया और अपने पूरे जीवन आम आदमी, राजनीतिक पाखण्ड, सामाजिक विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य लिखा।
प्रमुख कृतियाँ: 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'तिरछी रेखाएँ', 'सदाचार का ताबीज', 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'रानी नागफनी की कहानी'।

साहित्यिक विशेषताएँ: परसाई जी की भाषा सहज-सरल किन्तु चुभती हुई है; उन्होंने व्यंग्य को केवल हास्य नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों को उजागर करने का सशक्त माध्यम बनाया। यथार्थवादी दृष्टिकोण, बेबाक भाषा-शैली और गहरी सामाजिक प्रतिबद्धता उनके गद्य की पहचान है।

5(b). निम्नलिखित में से किसी एक कवि का जीवन परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए — i) मैथिलीशरण गुप्त ii) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' iii) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

Correct Answer: —

Solution:

मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964): 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से सम्मानित, जन्म चिरगाँव (झाँसी) में हुआ। द्विवेदी युग की खड़ी बोली काव्य-परम्परा के सर्वप्रमुख कवि।

प्रमुख कृतियाँ: 'साकेत' (महाकाव्य, ऊर्मिला के चरित्र को केन्द्र में रखकर), 'यशोधरा', 'पंचवटी', 'भारत-भारती', 'जयद्रथ-वध'।

साहित्यिक विशेषताएँ: राष्ट्रीय चेतना, नारी-गरिमा का उन्नयन, भारतीय संस्कृति व इतिहास का गौरव-गान, सरल-सुबोध खड़ी बोली में प्रबन्ध व मुक्तक दोनों शैलियों में सफल रचनाकर्म इनकी पहचान है।

6. कहानी कला के तत्वों के आधार पर 'बहादुर' कहानी की समीक्षा कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

कथानक: अमरकान्त की 'बहादुर' कहानी एक नेपाली किशोर नौकर बहादुर के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक मध्यवर्गीय परिवार में काम करता है और अन्ततः चोरी के

मिथ्या आरोप में गृहस्वामिनी द्वारा प्रताड़ित होकर घर छोड़ देता है, बाद में जिसकी हत्या हो जाती है।
पात्र: बहादुर एक भोला, स्वाभिमानी किशोर है; गृहस्वामिनी मध्यवर्गीय संकीर्ण मानसिकता व सन्देह-भाव की प्रतीक है।
उद्देश्य: कहानी घरेलू नौकरों के प्रति समाज के अमानवीय व्यवहार तथा मध्यवर्गीय पाखण्ड को उजागर करती है।
भाषा-शैली: सहज, यथार्थवादी और मार्मिक भाषा-शैली में लिखी यह कहानी सामाजिक यथार्थ का सशक्त चित्रण करती है।

OR

'कर्मनाशा की हार' कहानी के प्रमुख पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

'कर्मनाशा की हार' कहानी का प्रमुख पात्र अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, संघर्षशीलता और प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझने के साहस के लिए उल्लेखनीय है। कर्मनाशा नदी (जो लोक-मान्यता में अपशकुनी मानी जाती रही है) की चुनौतियों के प्रतीकात्मक सन्दर्भ में, पात्र पुरानी रूढ़ियों और अन्धविश्वासों को चुनौती देते हुए अपने कर्म व पुरुषार्थ से विजय प्राप्त करता है। उसका चरित्र आत्मविश्वास, श्रम में आस्था और परम्परागत भाग्यवाद के विरुद्ध यथार्थवादी दृष्टिकोण का प्रतीक है।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर – 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की विशेषताएँ लिखिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: –

Solution:

रामधारी सिंह 'दिनकर' रचित 'रश्मिरथी' (1952) महाभारत के उपेक्षित नायक कर्ण के जीवन पर आधारित खण्डकाव्य है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ:

1) **कर्ण का मानवीय, ओजस्वी चरित्रांकन** — जन्म से मिली उपेक्षा के बावजूद उदारता व वीरता।
2) **ओजगुण-प्रधान भाषा-शैली** — दिनकर की वीर-रस-प्रधान, प्रवाहमयी काव्य-भाषा।
3) **सामाजिक विषमता पर करारा प्रहार** — जन्म-आधारित जाति-भेद के विरुद्ध मुखर स्वर।
4) **दानवीरता व मित्रता के आदर्श** — कर्ण-दुर्योधन मैत्री व कवच-कुण्डल दान के प्रसंग।

OR

स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर — 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख कीजिए। (अधिकतम शब्द सीमा 80 शब्द)

Correct Answer: —

Solution:

'रश्मिरथी' की प्रमुख घटनाएँ:
1) कर्ण का जन्म व कुन्ती द्वारा उसे नदी में प्रवाहित करना, अधिरथ-राधा द्वारा पालन।
2) गुरु परशुराम से शिक्षा व शाप की घटना।
3) रंगभूमि में कर्ण का अपमान व दुर्योधन द्वारा अंगराज बनाया जाना, जिससे प्रगाढ़ मित्रता स्थापित होती है।
4) इन्द्र द्वारा छद्मवेश में कवच-कुण्डल माँगना और कर्ण का दानवीरता-पूर्वक उन्हें दे देना।
5) कुन्ती द्वारा युद्ध-पूर्व सत्य बताना, किन्तु कर्ण का कौरव-पक्ष के प्रति निष्ठा बनाए रखना।
6) अन्ततः महाभारत युद्ध में कर्ण की वीरगति।

8(a). निम्नलिखित संस्कृत गद्यांश का संदर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः, महर्षिव्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास-भारवि-भवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नैः अद्यापि पाठकानां हृदि विराजन्ते। इयं भाषा अस्माभिः मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च, यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं, गौरवम्, अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्वञ्च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते। इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति। ततः सुसूक्तम् 'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती' इति।

Correct Answer: —

Solution:

संदर्भः प्रस्तुत गद्यांश संस्कृत भाषा के गौरव एवं उसके प्राचीन महाकवियों के अवदान का वर्णन करता है।
हिन्दी अनुवादः संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि, महर्षि व्यास, कविकुल के गुरु कालिदास तथा भास, भारवि, भवभूति आदि अन्य महाकवि अपने श्रेष्ठ ग्रन्थ-रत्नों के द्वारा आज भी पाठकों के हृदय में विराजमान हैं। यह भाषा हमारे द्वारा माता के समान सम्माननीय और वन्दनीय है, क्योंकि भारतमाता की स्वतन्त्रता, गौरव, अखण्डता और सांस्कृतिक एकता संस्कृत के द्वारा ही सुरक्षित रखी जा सकती है। यह संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में सबसे प्राचीन और श्रेष्ठ है। इसीलिए यह सुन्दर कथन कहा गया है — 'सभी भाषाओं में मुख्य, मधुर और दिव्य देवभाषा (संस्कृत) ही है'।

OR

निम्नलिखित संस्कृत गद्यांश का संदर्भसहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
बौद्धयुगे इमे सिद्धान्ताः वैयक्तिक-जीवनस्य अभ्युत्थानाय प्रयुक्ताः आसन्। परमद्य इमे सिद्धान्ताः राष्ट्राणां परस्परमैत्री-सहयोग-कारणानि, विश्वबन्धुत्वस्य, विश्वशान्तेश्च साधनानि सन्ति। राष्ट्रनायकस्य श्रीजवाहरलाल-नेहरू-महोदयस्य प्रधानमन्त्रित्वकाले चीनदेशेन सह भारतस्य मैत्री पञ्चशीलसिद्धान्तानधिकृत्य एवाभवत्। यतो हि उभावपि देशौ बौद्धधर्मे निष्ठवन्तौ। आधुनिके जगति पञ्चशीलसिद्धान्ताः नवीनं राजनैतिकं स्वरूपं गृहीतवन्तः।

Correct Answer: —

Solution:

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश पंचशील सिद्धान्तों के बौद्ध-युगीन मूल से लेकर आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उनके प्रयोग का वर्णन करता है।
हिन्दी अनुवाद: बौद्ध-युग में ये सिद्धान्त वैयक्तिक जीवन के उत्थान के लिए प्रयुक्त होते थे। परन्तु आज ये सिद्धान्त राष्ट्रों की परस्पर मैत्री-सहयोग के कारण, विश्व-बन्धुत्व एवं विश्व-शान्ति के साधन बन गए हैं। राष्ट्रनायक श्री जवाहरलाल नेहरू महोदय के प्रधानमन्त्रित्व-काल में चीन देश के साथ भारत की मैत्री पंचशील सिद्धान्तों को आधार बनाकर ही हुई थी, क्योंकि दोनों ही देश बौद्ध धर्म में निष्ठावान थे। आधुनिक विश्व में पंचशील सिद्धान्तों ने एक नवीन राजनैतिक स्वरूप ग्रहण कर लिया है।

8(b). निम्नलिखित श्लोकों का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः। गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य सत्प्रसवा इव॥

Correct Answer: –

Solution:

संदर्भ: यह श्लोक श्रेष्ठ पुरुषों के गुणों की परस्पर श्रृंखला-बद्धता को दर्शाता है।
हिन्दी अनुवाद: ज्ञान होने पर भी मौन (विनम्रता) रखना, शक्ति (सामर्थ्य) होने पर भी क्षमा करना, और त्याग करने पर भी प्रशंसा की इच्छा न रखना – ये सभी गुण एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं, मानो एक ही सद्गुण-रूपी वृक्ष की उत्तम सन्ततियाँ हों।

OR

निम्नलिखित श्लोकों का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
उदेति सविता ताम्रः ताम्र एवास्तमेति च। सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता॥

Correct Answer: –

Solution:

संदर्भ: यह श्लोक महापुरुषों की स्थिरता और समभाव का वर्णन सूर्य के उदाहरण द्वारा करता है।
हिन्दी अनुवाद: सूर्य लाल (ताम्र वर्ण) होकर उदय होता है और लाल होकर ही अस्त भी होता है। इसी प्रकार महान पुरुषों का स्वभाव सम्पत्ति (सुख-समृद्धि) और विपत्ति (दुःख-संकट) — दोनों ही अवस्थाओं में एक-समान बना रहता है; वे कभी विचलित नहीं होते।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए — क) विदुषः ब्राह्मणस्य पत्नी कथं दुःखिनी आसीत्?

Correct Answer: —

Solution:

संस्कृत उत्तर: सा ब्राह्मणी दारिद्र्येण पतेः अकर्मण्यतया च निरन्तरं दुःखिनी आसीत्, यतो गृहे भोजनसामग्री एव नासीत्।
हिन्दी भावार्थ: वह ब्राह्मणी दरिद्रता और पति की अकर्मण्यता के कारण निरन्तर दुखी रहती थी, क्योंकि घर में भोजन-सामग्री ही नहीं थी।

OR

संस्कृतसाहित्यस्य अनुशीलनेन के गुणाः सञ्जायन्ते?

Correct Answer: —

Solution:

संस्कृत उत्तर: संस्कृतसाहित्यस्य अनुशीलनेन सदाचारः, विनयः, ज्ञानं, सांस्कृतिक-चेतना, राष्ट्रीय-एकता च सञ्जायन्ते।
हिन्दी भावार्थ: संस्कृत साहित्य के अध्ययन से सदाचार, विनम्रता, ज्ञान, सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय एकता जैसे गुण उत्पन्न होते हैं।

OR

कविकुलगुरुः कः कथ्यते?

Correct Answer: –

Solution:

संस्कृत उत्तर: कविकुलगुरुः कालिदासः कथ्यते, यतः सः संस्कृतसाहित्यस्य श्रेष्ठतमः महाकाव्य-नाटककारः आसीत्।
हिन्दी भावार्थ: कविकुल का गुरु महाकवि कालिदास को कहा जाता है, क्योंकि वे संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य एवं नाटककार थे।

OR

वसन्तकाले वृक्षाः कीदृशाः भवन्ति?

Correct Answer: –

Solution:

संस्कृत उत्तर: वसन्तकाले वृक्षाः नवपल्लवैः पुष्पैश्च सुशोभिताः भवन्ति, सर्वत्र मनोहरं वातावरणं भवति।
हिन्दी भावार्थ: वसन्त ऋतु में वृक्ष नई पत्तियों और फूलों से सुशोभित हो जाते हैं, और चारों ओर मनोहर वातावरण छा जाता है।

10(a). 'वीर रस' के लक्षण का उल्लेख करते हुए उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: –

Solution:

लक्षण: जहाँ युद्ध, साहस, पराक्रम या उत्साह का वर्णन हो और उत्साह नामक स्थायीभाव विभाव-अनुभाव-संचारीभावों के संयोग से पुष्ट होकर रस-दशा को प्राप्त हो, वहाँ वीर रस होता है।
उदाहरण: "बूढ़े भारत में आया फिर से नवजीवन का सन्देश, हुआ पौरुष फिर से

युवा, गया बचपन का दुर्बल वेश।" (दिनकर) — यहाँ उत्साह व पराक्रम का भाव वीर रस को स्पष्ट करता है।

OR

'शान्त रस' के लक्षण का उल्लेख करते हुए उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

लक्षण: जहाँ सांसारिक विषयों से वैराग्य उत्पन्न होकर निर्वेद (शम) नामक स्थायीभाव परिपुष्ट होकर रस-रूप में परिणत हो, वहाँ शान्त रस होता है।
उदाहरण: "मन रे तन कागद का पुतला, लागै बूँद बिनसि जाय छिन में, गरब करै क्या इतना।" (कबीर) — यहाँ संसार की नश्वरता के बोध से उत्पन्न वैराग्य-भाव शान्त रस को दर्शाता है।

10(b). 'सन्देह' अलंकार की परिभाषा देते हुए उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

परिभाषा: जहाँ किसी वस्तु को देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि वह वास्तव में क्या है, वहाँ सन्देह अलंकार होता है।
उदाहरण: "सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है, कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही की सारी है।" — यहाँ साड़ी और नारी के मध्य निश्चयात्मक ज्ञान न होने से सन्देह अलंकार है।

OR

भ्रान्तिमान अलंकार की परिभाषा देते हुए उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

परिभाषा: जहाँ किसी वस्तु के अत्यन्त सादृश्य के कारण उसे भूलवश किसी अन्य वस्तु के रूप में निश्चयपूर्वक मान लिया जाता है, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है।
उदाहरण: "नाक का मोती अधर की कान्ति से, बीज दाड़िम का समझ कर भ्रान्ति से, देख भूल दुरा गयो मृगच्छाना।" — यहाँ नाक के मोती को अनार का दाना समझने की निश्चयात्मक भ्रान्ति है।

10(c). 'दोहा' छन्द का परिभाषासहित उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

परिभाषा: दोहा एक अर्द्धसम मात्रिक छन्द है, जिसके प्रथम व तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। इसमें कुल चार चरण होते हैं।
उदाहरण: "रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय। टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ि जाय॥" (रहीम) — यहाँ 13-11-13-11 मात्रा-क्रम दोहा छन्द को प्रमाणित करता है।

OR

'सोरठा' छन्द का परिभाषासहित उदाहरण दीजिए।

Correct Answer: —

Solution:

परिभाषा: सोरठा दोहे का ही उलटा रूप है — इसमें प्रथम व तृतीय चरण में 11-11 मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।
उदाहरण: "जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।" — इस प्रकार की

11-13-11-13 मात्रा-व्यवस्था वाली पंक्तियाँ सोरठा छन्द का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं (रामचरितमानस में सोरठा छन्द का व्यापक प्रयोग मिलता है)।

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए – क) नयी शिक्षा नीति युवाओं के लिए वरदान है। ख) भारतीय संस्कृति का अवमूल्यन। ग) राजनीतिक पार्टियों की दिशाहीनता। घ) इंटरनेट देश की प्रगति के लिए उपयोगी है। ङ) नारी सशक्तिकरण।

Correct Answer: –

Solution:

नारी सशक्तिकरण

भूमिका: नारी सशक्तिकरण का अर्थ है स्त्रियों को शिक्षा, आर्थिक स्वावलंबन, सामाजिक व राजनैतिक निर्णय-प्रक्रिया में समान भागीदारी तथा आत्मनिर्भरता प्रदान करना।

वर्तमान स्थिति: स्वतन्त्रता के पश्चात संवैधानिक समानता, शिक्षा के प्रसार, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, मुद्रा योजना, पंचायतों में महिला आरक्षण जैसी योजनाओं से नारी सशक्तिकरण की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

चुनौतियाँ: इसके बावजूद कन्या-भ्रूण-हत्या, दहेज-प्रथा, घरेलू हिंसा, असमान वेतन तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की कमी जैसी चुनौतियाँ अब भी विद्यमान हैं।

उपसंहार: नारी सशक्तिकरण केवल कानूनी प्रावधानों से नहीं, अपितु सामाजिक मानसिकता के परिवर्तन से ही सम्भव है।

12(a)(i). नाविक का सन्धि विच्छेद है –

(A) नाव + इक

(B) न + अइक

(C) नौ + इक

(D) ना + इक

Correct Answer: (C) नौ + इक

Solution:

उत्तर: नाविक = नौ + इक (वृद्धि सन्धि)। सही उत्तर है — नौ + इक (विकल्प स)।

12(a)(ii). सच्चित का सन्धि विच्छेद है —

(A) सत + चित

(B) सत् + चित्

(C) सति + चित

(D) सत्य + चित

Correct Answer: (B) सत् + चित्

Solution:

उत्तर: सच्चित = सत् + चित् (व्यंजन सन्धि — 'त्' के पश्चात 'च' आने पर 'त्' का 'च्' में परिवर्तन होकर 'सच्चित्' बनता है)। सही उत्तर है — सत् + चित् (विकल्प ब)।

12(a)(iii). इतस्ततः में सन्धि है —

(A) स्वर

(B) व्यंजन

(C) विसर्ग

(D) दीर्घ

Correct Answer: (C) विसर्ग

Solution:

उत्तर: इतस्ततः = इतः + ततः (विसर्ग सन्धि)। सही उत्तर है — विसर्ग (विकल्प स)।

12(b). निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का विग्रह करके समास का नाम लिखिए — i) नीलोत्पलम् ii) अनुरूपम् iii) चन्द्रशेखरः

Correct Answer: —

Solution:

चन्द्रशेखरः — विग्रह: चन्द्रः शेखरे यस्य सः (जिसके सिर पर चन्द्रमा है, अर्थात शिव)।
समास का नाम: बहुव्रीहि समास — क्योंकि यहाँ समस्त पद किसी अन्य (तीसरे) पद/अर्थ (शिव) की ओर संकेत करता है।

13. आपके क्षेत्र में अनेक अनधिकृत मकान बनाये जा रहे हैं। उनकी रोकथाम के लिए जिलाधिकारी को पत्र लिखिए।

Correct Answer: —

Solution:

सेवा में,
श्रीमान जिलाधिकारी महोदय,
[नगर का नाम]।

विषय: क्षेत्र में हो रहे अनधिकृत निर्माण की रोकथाम हेतु।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं [अपना नाम], [मोहल्ले/वार्ड का नाम] का निवासी हूँ। मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि पिछले कुछ महीनों से हमारे क्षेत्र में अनेक लोग बिना नक्शा पास कराए अनधिकृत रूप से मकान बना रहे हैं।

इससे क्षेत्र की योजनाबद्ध संरचना बिगड़ रही है, सड़कों की चौड़ाई कम हो रही है तथा जल-निकासी बाधित हो रही है।

अतः आपसे सविनय अनुरोध है कि इस विषय की उचित जाँच कराकर अनधिकृत निर्माण-कार्यों पर तत्काल रोक लगाने की कृपा करें।

सधन्यवाद।

भवदीय,
[हस्ताक्षर व नाम]
[दिनांक]

OR

विद्यालय के छात्र/छात्राओं के साथ आप समाज सेवा के लिए जाना चाहते हैं। पिताजी से अनुमति प्राप्त करने के लिए एक पत्र लिखिए।

Correct Answer: –

Solution:

पूज्य पिताजी,
सादर चरण-स्पर्श।

मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। पिताजी, मैं आपको सूचित करना चाहता/चाहती हूँ कि हमारे विद्यालय की ओर से अगले सप्ताह छात्र-छात्राओं के एक दल को निकटवर्ती गाँवों में समाज-सेवा कार्यक्रम (स्वच्छता अभियान, साक्षरता प्रसार व वृक्षारोपण) हेतु भेजा जा रहा है। मेरी भी इस दल में सम्मिलित होने की इच्छा है, क्योंकि इससे मुझे समाज-सेवा का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होगा। यह कार्यक्रम विद्यालय के शिक्षकों की देखरेख में ही सम्पन्न होगा।

अतः आपसे सविनय अनुरोध है कि मुझे इस समाज-सेवा कार्यक्रम में जाने की अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

आपका/आपकी आज्ञाकारी,
[नाम]
[दिनांक]

14(a). निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का प्रत्यय लिखिए – i) चलित्वा ii) कर्तव्य iii) रमणीय

Correct Answer: –

Solution:

कर्तव्य – मूल धातु: कृ (करना)। प्रत्यय: **तव्यत्** (कृ + तव्यत् = कर्तव्य)। यह विध्यर्थक कृदन्त प्रत्यय है, जो 'करने योग्य' अर्थ में प्रयुक्त होता है।

14(b). निम्नलिखित में से किसी एक शब्द के धातु एवं प्रत्यय का योग स्पष्ट कीजिए – i) भूत्वा ii) पठितव्य iii) शयनाय

Correct Answer: –

Solution:

भूत्वा – धातु: भू (होना), प्रत्यय: **क्त्वा** (भू + क्त्वा = भूत्वा)। यह पूर्वकालिक क्रिया (क्त्वान्त) प्रत्यय है, जिसका अर्थ है 'होकर'।

14(c). रेखांकित पदों में से किसी एक पद में प्रयुक्त विभक्ति तथा तत्सम्बन्धी नियम का उल्लेख कीजिए – i) अयं छात्रः पादेन खञ्जः। ii) सुग्रीवः रामस्य सखा आसीत्। iii) नगरेषु प्रयागः श्रेष्ठः अस्ति।

Correct Answer: –

Solution:

ii) सुग्रीवः रामस्य सखा आसीत् — 'रामस्य' में **षष्ठी विभक्ति (संबंध कारक)** है।

नियम: जहाँ एक संज्ञा का दूसरी संज्ञा से सम्बन्ध दिखाया जाता है, वहाँ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है — यहाँ 'राम का मित्र' अर्थ में सम्बन्ध दर्शाने हेतु 'रामस्य' में षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।